यरूशलेम में ठुकराया गया! (22:30–23:15)

यीशु मन्दिर में अपना अन्तिम सार्वजनिक संदेश दे रहा था। समाप्ति से पहले, रुककर उसने यरूशलेम के चारों ओर और इसमें रहने वालों की तरफ देखा। फिर, भारी मन से, उसने उस नगर को अलविदा कहा जिसने उसे ठुकराया था:

> हे यरूशलेम, हे यरूशलेम; तू जो भविष्यवक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन्हें पत्थरवाह करता है, कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा कर लूं, परन्तु तुम ने न चाहा। देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि अब से जब तक तुम न कहोगे, कि धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है,[1] तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे (मत्ती 23:37–39)।[2]

यीशु से लगभग 1,000 वर्ष पूर्व दाऊद राजा ने यरूशलेम (यबूस) पर कब्जा करके इसे अपनी राजधानी बना लिया था। वह संदूक को नगर में ले आया था, और बाद में उसके पुत्र सुलैमान ने वहां पर मन्दिर बनाया था। इस्राएलियों के लिए यरूशलेम ''परमेश्वर के नगर'' के रूप में प्रसिद्ध हो गया था। 586 ई. पू. बाबुल द्वारा यरूशलेम के विनाश के बाद, यहूदियों की दासता से यह नगर शोकित हो गया था। जल्दी से जल्दी, उन्होंने इसका पुनर्निर्माण किया था। एक हज़ार वर्षों तक, यरूशलेम यहूदी लोगों के धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन का केन्द्र रहा था। परमेश्वर के विरुद्ध इसके लगातार विरोध के कारण यीशु ने ऐलान किया कि परमेश्वर के पवित्र नगर के रूप में इसके दिन थोड़े रह गए हैं। यह पाठ यरूशलेम के परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों का भाग बने रहने के अन्तिम अवसरों के विषय में है।

इस तथ्य के बावजूद कि ''किसी नई कलीसिया की स्थापना नहीं हुई थी'' और ''न किसी धर्मशास्त्रीय या कलीसिया सम्बन्धी किसी समस्या का समाधान हुआ [था]'' लूका ने यरूशलेम में पौलुस के अन्तिम कुछ दिनों को उतना ही समय दिया जितना उसने प्रत्येक मिशनरी यात्रा को दिया था। बहुत से टीकाकारों का मानना है कि ऐसा करने का लूका के पास कारण था। कई लोगों का यह भी मानना है कि ''इन अध्यायों का महत्व इस्राएल द्वारा सुसमाचार को ठुकराने के उदाहरण में मिलता है।''

> लूका यरूशलेम में पौलुस के जाने को दर्ज करने के लिए काफी स्थान देता है, इसलिए नहीं कि यह यात्रा अपने आप में महत्वपूर्ण थी, बल्कि इसलिए कि इससे यरूशलेम द्वारा सुसमाचार को अन्तिम बार ठुकराए जाने का पता चलता है।
>
> एक उद्देश्य ... लोगों को यह दिखाना था ... कि परमेश्वर ने यहूदी धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं रखना था, और यह कि एक राष्ट्र के रूप में, यहूदी जाति का परमेश्वर से कोई सम्बन्ध नहीं बने रहना था। ... जो बातें हम यहां देखते हैं उन्हीं से मत्ती 24, मरकुस 13, और लूका 21 में प्रभु द्वारा यरूशलेम के भयानक विनाश की भविष्यवाणी का पूरा होना सिद्ध होगा। यहूदी लोग अपने पुरुखाओं की कमी को पूरा कर रहे थे, और दिखा रहे थे कि वे उन्हीं की संतान हैं जिन्होंने भविष्यवक्ताओं को कत्ल किया था (मत्ती 23:31, 32)।
>
> ये लोग पहले ही तीन हत्याओं अर्थात यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले, मसीह और स्तिफनुस की हत्या में शामिल थे। यदि परमेश्वर रोमी पहरेदार के हस्तक्षेप से पौलुस को न छुड़ाता तो उन्होंने चौथी हत्या भी कर देनी थी। ... इस्राएल को अब एक तरफ कर दिया गया था; ... इसकी परख अवधि पूरी हो चुकी थी।

बाइबल सिखाती है कि यहोवा धैर्य करने वाला परमेश्वर है, परन्तु उसके धैर्य की एक सीमा है। वह आज्ञा न मानने वालों को केवल एक निश्चित समय के लिए सहन करेगा। फिर वह कहता है, ''बस बहुत हो गया! अब तुम इसके आगे नहीं जाओगे!'' इस पाठ में, हम उन अन्तिम घटनाओं को देखेंगे जिनके कारण परमेश्वर ने यरूशलेम नगर को कहा ''बस बहुत हो गया!''

एक विभाजित सभा (22:30-23:10)

यरूशलेम में रोमी पलटन का सरदार फंसा हुआ था। एक रोमी नागरिक उसकी हिरासत में था; किसी रोमी नागरिक को उस पर लगे आरोप को सिद्ध किए बिना पकड़ना रोमी कानून के विरुद्ध था, परन्तु उसे कुछ पता नहीं था कि उस आदमी ने क्या गलती की थी। सच्चाई को जानने के लिए वह पहले ही तीन प्रयास कर चुका था। इस आदमी को भीड़ से बचाकर ले जाते समय उसने दंगाइयों से पूछा था कि इसकी गलती क्या थी, परन्तु शायद किसी को भी पता नहीं था। उसने इस बन्दी को भीड़ के सामने बोलने की अनुमति दी थी, परन्तु इसकी बात पूरी होने के बाद भी उसे समझ नहीं आया था कि क्या हुआ। जब कैदी से सच्चाई उगलवाने के लिए वह उसे मारने लगा, तो इसने अधिकारियों को यह बताकर कि वह एक रोमी नागरिक था, चौंका दिया।

वह अधिकारी इस सारी कार्यवाही का फैसला लेने की कोशिश में सारी रात सोया नहीं होगा। सुबह, उसे लगा कि उसका समाधान मिल गया। उलझन का कारण राजनीतिक नहीं बल्कि धार्मिक था, इसलिए उसने इस मामले को नगर में धर्मशास्त्र के विशेषज्ञों के सामने लाना था। ''दूसरे दिन उसने ठीक-ठीक जानने की इच्छा से कि यहूदी [पौलुस] पर क्यों दोष लगाते हैं, उसके बन्धन खोल दिए;[3] और महायाजकों[4] और सारी महासभा [सन्हेद्रिन][5] को इकट्ठे होने की आज्ञा दी,[6] और पौलुस को नीचे ले जाकर[7] उनके साम्हने खड़ा कर दिया''[8] (22:30)।

इसमें कोई संदेह नहीं कि मन्दिर के प्रांगण में एक दिन पहले पड़ी मार के कारण पौलुस का शरीर पीड़ा से कांप रहा था, परन्तु वह यहूदी लोगों के उच्चतम न्यायालय के सामने तना खड़ा था। वह उसी स्थान पर खड़ा था जहां पतरस, यूहन्ना और अन्य प्रेरितों को खड़ा किया गया था; जहां पर स्तिफनुस खड़ा हुआ था; जहां उसका प्रभु खड़ा हुआ था। कई वर्ष पहले, पौलुस इस सभा के साथ बैठा था;[9] अब वह उनके सामने था और उसे पता चल गया था कि उन निर्दयी, कठोर लोगों के सामने खड़ा होने पर कैसा लगता है। उनमें से कइयों को तो वह पहचानता था;[10] अधिकतर को नहीं।

अन्त में, पौलुस को बोलने की अनुमति दे दी गई।[11] भीड़ के साथ बात करते हुए उसने उनका ध्यान हाथ हिलाकर अपनी ओर किया (21:40); अब उसने सभा के शांत होने और हर एक के उसकी ओर नज़रें टिकाने तक टकटकी लगाकर महासभा की ओर देखा (23:1क)।[12] दृढ़तापूर्वक, उसने कहना आरम्भ किया: ''हे भाइयो,[13] मैंने आज तक परमेश्वर के लिए बिल्कुल सच्चे विवेक से जीवन बिताया है''[14] (23:1ख)।[15] अन्य शब्दों में, ''मेरा हृदय जानता है कि जिन बातों के लिए मुझ पर आरोप लगा है, उनके लिए मैं दोषी नहीं हूं। मुझ पर लगे सभी आरोप गलत हैं!''[16]

महायाजक ने जो ऐसी सभाओं की प्रधानगी करता था, पौलुस के स्पष्ट शब्दों पर उसे दण्ड देने और शांत करने के लिए ''उसके मुंह पर थप्पड़ मारने की आज्ञा दी'' (23:2ख)।[17] महायाजक का नाम हनन्याह था (23:2क),[18] इतिहासकारों के अनुसार वह इस पद पर बैठने वालों में सबसे बुरे और बेईमान लोगों में से एक था।[19] वह ''एक पेटू, चोर, लोभी, लुटेरा और रोमी सेवा में देशद्रोही'' था।

ज़ोर का थप्पड़ प्रेरित को चुप न करा सका। मुंह से खून थूकते हुए उसने पलटकर डांटा: ''हे चूना फिरी हुई भीत, परमेश्वर तुझे मारेगा, तू व्यवस्था के अनुसार मेरा न्याय करने को बैठा है, और फिर क्या व्यवस्था के विरुद्ध मुझे मारने की आज्ञा देता है?'' (23:3)। व्यवस्था स्पष्ट थी कि किसी को भी तब तक दण्ड न दिया जाए जब तक कि उस पर मुकदमा चलने के बाद वह दोषी न ठहरे (लैव्यव्यवस्था 19:15; व्यवस्थाविवरण 25:1, 2)।[20] यहां तक कि अलिखित व्यवस्था थी, कि ''जो कोई किसी इस्राएली की गाल पर मारता है, वह ऐसे मारता है, जैसे परमेश्वर की महिमा को मार रहा हो।''

पौलुस की ''चूना फिरी हुई भीत'' बात से उसके श्रोता परिचित थे। यहेजकेल भविष्यवक्ता ने झूठे भविष्यवक्ताओं की तुलना उन कच्ची दीवारों से की थी जिनकी दरारों

को छिपाने के लिए उन पर चूना फेर दिया गया हो (यहेजकेल 13:10-16)। पौलुस ने अपने सताने वालों पर कपट का आरोप लगाया![21] (इस प्रेरित की भविष्यवाणी कि परमेश्वर हनन्याह को उसकी निर्दयता के लिए डांटेगा, दस से भी कम वर्षों में सत्य हो गई, जब रोम का समर्थन करने के कारण सन 66 ई. में यहूदी जेलोतेसों द्वारा इस महायाजक का वध कर दिया गया।[22])

उसकी ओर अंगुली करके कहे गए पौलुस के शब्दों से सभा स्तब्ध रह गई थी। ''उन्होंने कहा, क्या तू परमेश्वर के महायाजक को बुरा कहता है ?'' (23:4)। पौलुस भौंचक्का रह गया। उसने कहा, ''हे भाइयो, मैं नहीं जानता था, कि यह महायाजक है; क्योंकि लिखा है, कि अपने लोगों के प्रधान को बुरा न कह'' (23:5)। यह हवाला निर्गमन 22:28 से लिया गया था। एक बार फिर पौलुस ने दिखाया कि व्यवस्था के विरुद्ध बोलने के बजाय (प्रेरितों 21:28), उसके मन में इसके प्रति गहरा सम्मान था।

विद्वान दो प्रश्नों को सुलझाने के लिए संघर्षरत हैं। पहला प्रश्न है कि पौलुस को क्यों पता नहीं चला कि वह वहां पर महायाजक के विरुद्ध बोल रहा है ? कई लोगों का सुझाव है कि इस प्रेरित की नजर कमज़ोर थी (ध्यान दें गलतियों 4:15; 6:11)। कइयों का विचार है कि यह सभा रोमी सरकार ने बुलाई थी, हनन्याह अपनी जगह पर नहीं बैठा था और उसने महायाजकों वाली पोशाक भी नहीं पहनी थी। कई यह मानते हैं कि पौलुस पिछले दो दशकों में केवल कुछ बार ही यरूशलेम में गया था, इसलिए उसे महायाजक की पहचान नहीं थी।[23]

दूसरा प्रश्न पहले से बहुत मिलता-जुलता है। क्या पौलुस सचमुच खेद प्रकट कर रहा था, या उसके शब्द केवल व्यंग्यात्मक थे ? जिन लोगों का यह मानना है कि पौलुस व्यंग्य से ऐसे कह रहा था वे ज़ोर देते हैं कि वह कह रहा था, ''मैं हनन्याह को महायाजक के रूप में नहीं पहचानता, *क्योंकि निश्चय ही सच्चा महायाजक इस प्रकार का बर्ताव नहीं करता!''* व्यक्तिगत तौर पर, मैं पौलुस की बात का अर्थ प्रत्यक्ष रूप से लेता हूं। बाइबल की व्याख्या का एक बुनियादी सिद्धांत यह है कि जब तक मजबूरी न हो तब तक उन शब्दों का अर्थ सीधा ही लेना चाहिए और मुझे ऐसा कोई कारण नहीं लगता कि पौलुस के शब्दों को उनके स्वाभाविक, साधारण और सामान्य अर्थ में न लिया जाए।[24] निर्गमन से लिया गया पौलुस का हवाला व्यंग्य से अधिक खेद प्रकट करने के साथ सही बैठता है।

मेरा मानना है कि लूका पौलुस की इन्सानियत को ही दिखा रहा था। निश्चय ही, हम में से हर एक कभी न कभी दूसरा गाल फेरने के बजाय (मत्ती 5:39), जैसे को तैसा व्यवहार करते हुए दूसरे की तरह कठोर हो जाते हैं। फिर, मैं मानता हूं कि पौलुस को अहसास हुआ कि उसने क्या किया था और सच्चे मन से क्षमा मांग कर उसने सचमुच खेद प्रकट किया था। उस बात में, वह हम सबके लिए एक उदाहरण है। बेशक, यह टिप्पणी की जा सकती है कि पौलुस ने यह नहीं कहा कि उसने सही कहा था (उसकी बात 100 फीसदी सही थी), परन्तु इसकी जगह वह ऐसे आदमी को बदनाम करने की गलती कर रहा था जिसे परमेश्वर का अगुआ माना जाता था। चाहे हम व्यक्ति का सम्मान न भी कर

पाएं तो भी उसके पद का सम्मान कर सकते हैं।

पौलुस किसी समय महासभा के साथ बड़ी निकटता से जुड़ा हुआ था, इसलिए उसे वास्तव में लगा होगा कि उसे उनकी ओर से न्याय मिल सकता है। उसके मुंह में लहू का नमकीन स्वाद, महायाजक के चेहरे पर घृणा,[25] और सभा में बढ़ते विद्वेष के कारण उसके मन में ऐसा विचार आया। अब उसकी मुख्य दिलचस्पी उस सभा से जीवित निकलने में थी।

पौलुस महासभा के संगठन को अच्छी तरह जानता था। सदूकियों की संख्या अधिक थी, परन्तु फरीसी जो अल्पमत थे, वे भी वहां उपस्थित थे। पौलुस इन दोनों गुटों में पाए जाने वाले शिक्षा सम्बन्धी मतभेदों को भी अच्छी तरह से जानता था। बहुत से मतभेदों में से तीन ज्यादा महत्वपूर्ण थे: ''सदूकी तो यह कहते हैं, कि न पुनरुत्थान है,[26] न स्वर्गदूत और न आत्मा है; परन्तु फरीसी दोनों को मानते हैं'' (23:8)।[27] इस प्रकार, ''पौलुस ने यह जानकर, कि कितने सदूकी और कितने फरीसी हैं, सभा में पुकारकर कहा,[28] हे भाइयो, मैं फरीसी[29] और फरीसियों के वंश का हूं,[30] मरे हुओं की आशा और पुनरुत्थान के विषय में मेरा मुकदमा हो रहा है''[31] (23:6)।

पौलुस पर मसीह के जी उठने का प्रचार करने का आरोप नहीं था (21:28), परन्तु वह जानता था कि यहूदियों के अगुवे वास्तव में मसीहियों से इसलिए घृणा करते थे क्योंकि वे उस यीशु का प्रचार करते थे जो मुर्दों में से जी उठा था (ध्यान दें 4:2)। यह कहकर कि उस पर ''मरे हुओं की आशा और पुनरुत्थान के विषय में'' मुकदमा चल रहा है, पौलुस वास्तविक मुद्दे को उठाने पर ज़ोर दे रहा था। अपनी सारी पेशियों में, उसने ज़ोर देना था कि उस पर लगाए गए सारे आरोप सुनियोजित थे और असल मुद्दा जी उठने का ही था (ध्यान दें 24:21; 26:6-8, 21-23; 28:20)।

क्या पौलुस को अनुमान था कि उसके शब्द कितने विस्फोटक होंगे? हमें नहीं मालूम,[32] पर ...

> जब उसने यह बात कही तो फरीसियों और सदूकियों में झगड़ा होने लगा; और सभा में फूट पड़ गई। ... तब बड़ा हल्ला मचा और कितने शास्त्री जो फरीसियों के दल के थे, उठकर यों कहकर झगड़ने लगे, कि हम इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पाते; और यदि कोई आत्मा या स्वर्गदूत उस से बोला है तो फिर क्या?[33] (23:7-9)।

फरीसियों के कथन से पता चलता है कि वे पौलुस *की ओर* थे तथा सदूकी उसके *विरुद्ध* थे और उसे पकड़ने का अवसर पाकर रोमांचित हो उठे थे। पौलुस की बातों ने वही असर किया जो एक आदमी द्वारा दो जंगली जानवरों से अपने आपको फाड़ने से बचाने के लिए उनको आपस में भिड़ाने से होता है।[34]

एक बार फिर, उस गरिमापूर्ण संगठन को घबराहट में डाल दिया गया था (ध्यान दें

7:54-58)। मैं उन बुज़ुर्ग यहूदियों को चमकीले कपड़े पहने एक दूसरे के ऊपर चिल्लाते हुए देख सकता हूं। इस तूफान के बीच पौलुस फंसा था। रोमी अधिकारी पौलुस को आश्चर्य से देख रहे थे। एक तरफ सदूकी आंखों में खून लिए उस पर झपट रहे थे, दूसरी तरफ फरीसी उसे भगाने की कोशिश कर रहे थे।

रोमी अधिकारी ने पौलुस की जान बचाने के लिए तीसरी बार, हस्तक्षेप करना था। ''जब बहुत झगड़ा हुआ, तो पलटन के सरदार ने इस डर से कि वे पौलुस के टुकड़े-टुकड़े न कर डालें'' (23:10क) जल्दी से और सेना बुलाकर ''आज्ञा दी, कि उतरकर उसको उनके बीच में से बरबस निकालो, और गढ़ में ले जाओ'' (23:10ख)।

ईश्वरीय दिलासा (23:11)

उस रात जेल की कोठरी में अकेला, पौलुस निराश व हताश था। ऐसा लग रहा था जैसे उसकी सक्रिय सेवकाई पूरी हो गई हो और वह कभी रोम नहीं पहुंचेगा। परन्तु, उसे परमेश्वर ने त्यागा नहीं था। ''उसी रात प्रभु ने उसके पास खड़े होकर कहा; हे पौलुस, ढाढ़स बान्ध; क्योंकि जैसी तूने यरूशलेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी देनी होगी'' (आयत 11)। इस चमत्कारी घटना को विस्तार में पढ़ने से पहले, आइए यरूशलेम में पौलुस के ठुकराए जाने के एक अन्तिम उदाहरण पर सरसरी नज़र मारें।

शपथ (23:12-15)

प्रेरितों 23:12-15 में हम पढ़ते हैं:

> जब दिन हुआ, तो यहूदियों ने एका किया, और शपथ खाई कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें, तब तक खाएं या पीएं तो हम पर धिक्कार। जिन्होंने आपस में यह शपथ खाई थी, वे चालीस जनों के ऊपर थे। उन्होंने महायाजकों और पुरनियों के पास आकर कहा, हम ने यह ठाना है; कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें, तब तक यदि कुछ चखें भी, तो हम पर धिक्कार है। इसलिए अब महासभा समेत पलटन के सरदार को समझाओ, कि उसे तुम्हारे पास ले जाए, मानो कि तुम उसके विषय में और भी ठीक जांच करना चाहते हो, और हम उस के पहुंचने से पहिले ही उसे मार डालने के लिए तैयार रहेंगे।

आयत 20 में टिप्पणी है कि सभा के अगुवे भी इस खूनी षड्यन्त्र से सहमत थे। हमें वारेन वियर्सबे के साथ सहमत होना पड़ेगा, जिसने कहा, ''जब चालीस से अधिक लोग धर्म के नाम पर किसी भक्त यहूदी की हत्या का षड्यन्त्र कर सकते थे'' और ''महायाजक और पुरनिये उस अपराध में सहभागी हो सकते थे तो निश्चय ही यरूशलेम परमेश्वर से बहुत दूर हो गया था!'' अध्याय 21 से 23 तक, मूर्तिपूजक रोमी पलटन के सरदार क्लाउदियुस लुसियास जिसने सच्चाई को खोजने की कोशिश की, में उन धार्मिक यहूदी अगुओं से बहुत भिन्नता है, जिन्होंने धोखे और विनाश से मामले को निपटाया।

बाद में, हम देखेंगे कि पौलुस उनके चंगुल से कैसे बचा, परन्तु अभी के लिए मैं यह तथ्य रेखांकित कर दूं कि यरूशलेम के यहूदी अगुओं ने सदा के लिए प्रमाणित कर दिया कि सुसमाचार उनके मनों को स्पर्श नहीं कर सकता। उन्होंने अपने आपको अनन्त जीवन के अयोग्य ठहराया (देखिए 13:46)।

सारांश

यीशु को यरूशलेम द्वारा अन्त में ठुकराए जाने और अन्तिम परिणामों का पूर्वानुमान था। अपने पापों के दण्ड के लिए, यरूशलेम का विनाश रोमियों द्वारा होना था (लूका 21:20); यरूशलेम अब परमेश्वर की अनन्त योजना का भाग नहीं रहना था। कुएं पर यीशु ने सामरी औरत को बताया, ''वह समय आया है कि तुम न तो इस [गिरिज्जीम] पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में''(यूहन्ना 4:21)। आज, यरूशलेम के भौतिक नगर की ओर देखने के बजाय, हम ''सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम'' (इब्रानियों 12:22) अर्थात परमेश्वर के सिंहासन के पास आते हैं, जहां यीशु उसके राज्य में अब सिंहासन पर बैठा है।

इस पाठ से हम कई सच्चाइयों का पता लगा सकते हैं। एक यह है कि हमारे जो मित्र हज़ार वर्ष के राज्य में विश्वास करते हैं वे यह गलत सिखाते हैं कि सारे संसार के लिए परमेश्वर की योजनाओं में यरूशलेम का अभी भी कोई स्थान है और फिर वह परमेश्वर के धर्म का केन्द्र होगा। परन्तु, व्यक्तिगत रूप से, यह सत्य है कि यदि हम परमेश्वर को ठुकराते रहें, तो एक दिन वह हमें पूरी तरह से अन्तिम रूप में ठुकरा देगा। बुद्धिमान ने कहा है, ''जो बार-बार डांटे जाने पर भी हठ करता है, वह अचानक नाश हो जाएगा और उसका कोई भी उपाय काम न आएगा'' (नीतिवचन 29:1)।[35] जब परमेश्वर आपको सुसमाचार सुनने तथा मानने का अवसर देता है, तो आप उस अवसर का आदर भी कर सकते हैं और उसे ठुकरा भी सकते हैं। परमेश्वर के मार्ग का आदर करने से छुटकारा तथा आनन्द मिलता है; परन्तु इसे ठुकराने का नतीजा ख़तरों और विनाश के रूप में मिलता है। परमेश्वर के मार्ग को लगातार ठुकराने का अर्थ उसके साथ ठट्ठा करना है, और परमेश्वर ठट्ठा करवाने से इन्कार कर देता है (गलतियों 6:7)! मैं आपसे बिनती करता हूं: यदि आप अपने जीवन में परमेश्वर तथा उसकी योजनाओं को ठुकराते रहे हैं तो अब उसे मत ठुकराइए!

पाद टिप्पणियां

[1]अन्तिम वाक्य सम्भवत: यीशु के द्वितीय आगमन की बात है। [2]यही बुनियादी शब्द लूका 13:34, 35 में मिलते हैं। मत्ती 23 के शब्द किसी विभिन्न अवसर पर बोले गए हो सकते हैं। [3]पौलुस कैदी के रूप में रहा, इसलिए इसका यह अर्थ नहीं कि पलटन के सरदार (कमांडर) ने उसे अपनी कैद से छोड़ दिया। इसका अर्थ सम्भवत: केवल इतना ही है कि वह उसे उसकी कोठरी से ले आया। [4]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 128 पर ''महायाजकों'' पर नोट्स देखिए। [5]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' की शब्दावली में पृष्ठ 200 पर ''महासभा'' देखिए। [6]महासभा रोम के संरक्षण से जमा हुई थी। इसलिए रोमी कमांडर को उन्हें इकट्ठे होने

का आदेश देने का अधिकार था। [7]अंटोनिया का किला मन्दिर के प्रांगण से ऊंचा था और वहां अन्यजातियों के आंगन की ओर से सीढ़ियों द्वारा जाया जाता था (नोट 21:31, 35, 40)। पौलुस को सीढ़ियों के नीचे ले जाया गया। [8]हम पक्का नहीं कह सकते कि यह महासभा की आधिकारिक सभा थी या अनाधिकारिक अर्थात वे नियत स्थान पर इकट्ठे हुए या किसी दूसरी जगह। ध्यान दें कि कमांडर सभा के लिए ठहरा रहा (23:10)। कमांडर की ज़िम्मेदारी पौलुस की सुरक्षा करना और यह देखना भी थी कि वह भाग न जाए (12:18, 19; 16:27)। कमांडर वहां था, इसलिए हम कम से कम इतना जानते हैं कि सभा मन्दिर के पवित्र भाग में इकट्ठी नहीं हुई। [9]पौलुस महासभा का सदस्य था या नहीं, परन्तु स्पष्टत: वह उस समय वहीं था जब स्तिफनुस पर मुकदमा चल रहा था। ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 31 पर नोट्स और पृष्ठ 104 पर पाद टिप्पणी 15 देखिए। [10]कई लोग जो बीस से अधिक वर्ष पहले सभा में थे अभी भी जीवित होंगे। फिर, कुछ जवान यहूदी जो उस समय उसके साथी थे अब सभा के लिए चुन लिए गए होंगे।

[11]महासभा के सामने औपचारिक मुकदमे के दौरान, सबसे पहले दिए जाने वाले आदेशों में आरोपी पर लगे आरोपों को पढ़ना होता था। यीशु के मुकदमे और प्रेरितों के मुकदमे के समय इस बात को नज़रअंदाज कर दिया गया था, क्योंकि सभा के पास उन पर लगाने के लिए कोई आरोप नहीं था। उन्हें उम्मीद थी कि आरोपियों की बातों से ही उन्हें औपचारिक आरोप मिल जाएंगे। सम्भवत: पौलुस के मुकदमे में भी ऐसा ही हुआ था; उसे पहले इस उम्मीद से बोलने दिया गया कि वह अपनी बातों से ही अपने आपको दोषी ठहरा देगा। स्पष्टत:, यह आरोप नहीं लगाया गया था कि उसने मन्दिर को अपवित्र किया (21:28), जो यह संकेत देता है कि उन्हें अहसास था कि यह बात निराधार थी। [12]शोरगुल भरी भीड़ का ध्यान आकर्षित करने के लिए यह एक प्रभावशाली ढंग है। पौलुस द्वारा ''भीड़ का आकार देखने'' अर्थात यह देखने के लिए कि वह किसे पहचानता है, या कौन उससे सहानुभूति रखता है आदि सुझाव दिए गए हैं। कइयों ने तो यह भी सुझाव दिया है कि शब्दों से केवल निकट दृष्टि की स्थिति का ही पता चलता है। [13]एक बार फिर, पौलुस अपने यहूदी श्रोताओं से परिचय करवाता हुआ आरम्भ करने लगा। कई लोगों ने सुझाव दिया है कि पौलुस ने सभा को औपचारिक रूप से ''भाइयो और पितरो'' (नोट 7:2) कहकर सम्बोधित न करके उनका अपमान किया, परन्तु यह लगता नहीं कि पौलुस एकदम से इस गुट की अप्रसन्नता मोल ले लेता जिसके हाथों में उसका जीवन था। [14]यूनानी शब्द का अनुवाद ''जीवन बिताया है'' उस शब्द से लिया गया है जिससे हमें ''राजनीति'' शब्द मिला है। इसका सम्बन्ध ''एक नागरिक के रूप में जीवन व्यतीत करने'' से है। पौलुस कह रहा था कि उसने अपना जीवन एक अच्छे यहूदी नागरिक के रूप में बिताया था और व्यवस्था को नहीं तोड़ा था। [15]24:16; 2 कुरिन्थियों 1:12; 1 तीमुथियुस 3:9 भी देखिए। निश्चित रूप से, पौलुस यह नहीं कह रहा था कि वह पाप रहित है। विवेक केवल तब ही सही अगुआई करता है जब उसे सही अगुआई मिली हो। अन्य शब्दों में यदि उसे सही ढंग से सिखाया गया हो। ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 187 पर ''विवेक'' पर विशेष लेख देखिए। पौलुस केवल इतना ही कह रहा था कि उसने उसी के अनुसार जीवन बिताया जो उसे *लगता* था कि सही है। मसीही लोगों को सताने के समय भी, पौलुस को लगता था कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है (26:9)। यह प्रमाणित करने के लिए कि ''किसी के विवेक से जीना'' अपने आप में परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए पर्याप्त नहीं है, यह एक उत्कृष्ट आयत है। [16]सुझाव दिया गया है कि पौलुस ने वहीं से बोलना शुरू किया जहां एक दिन पहले भीड़ के साथ बोलने पर उसे समाप्त करने के लिए मजबूर किया गया था। निश्चय ही यह सम्भव है कि महासभा के कुछ सदस्यों ने उसे भीड़ के साथ बात करते हुए सुना था। [17]महायाजक के लिए पौलुस को उत्तर देने से आसान उसे मारना था, क्योंकि महायाजक के पास पौलुस के विरुद्ध कोई प्रमाणित आरोप नहीं था। यीशु के मुकदमे में उसके मुंह पर भी मारा गया था (यूहन्ना 18:22)। [18]इसे प्रेरितों 4:6 वाला ''महायाजक हन्ना'' न समझ लें और निश्चय ही वह हनन्याह भी नहीं जिसे हम पहले प्रेरितों (5:1; 9:10) में मिले थे। [19]उसने अपने आपको धनी बनाने के लिए अपने याजकों से दशमांश चुराया था, और सत्ता में आने के लिए लोगों की हत्या की थी। [20]इब्रानियों 5:1, 2 में बताया गया है कि महायाजक का आचरण कैसा होना *चाहिए।*

[21]इस कथन की तुलना फरीसियों को ''चूना फिरी हुई कब्रें'' (मत्ती 23:27) कहने की यीशु की बात से कीजिए। [22]क्या इसका अर्थ यह है कि पौलुस ने आयत 3 का पहला भाग आत्मा की प्रेरणा से कहा। यदि पौलुस ने आयत 3 के पिछले भाग के लिए खेद प्रकट किया तो यह देखना कठिन है कि पौलुस की बात का कुछ भाग आत्मा की प्रेरणा से हो सकता है और कुछ नहीं। सम्भवत:, पौलुस केवल सामान्य सच्चाई ही बता रहा था कि जो लोग परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ते हैं अन्त में परमेश्वर की ओर से उन्हें दण्ड दिया जाएगा, यह ऐसी सच्चाई थी जिससे पवित्र शास्त्र को जानने वाले सभी लोग परिचित थे। [23]हमें इसकी व्याख्या का नहीं पता। कोई भी या सभी घटक शामिल हो सकते हैं, तथा शायद और भी काफी ऐसी बातें हैं जिनके बारे में हम कुछ नहीं जानते। सुझाव दिया गया है कि जब महायाजक बोल रहा था तो पौलुस दूसरी तरफ देख रहा था सो उसे पता नहीं चला कि किसने आज्ञा दी। दूसरी ओर, पौलुस ने अपना उत्तर उसे दिया जिसने आज्ञा दी थी, इसलिए यह व्याख्या ठीक नहीं लगती। एक और सम्भावना के लिए कि पौलुस ने हनन्याह को पहचान तो लिया था परन्तु उसे महायाजक के रूप में नहीं माना, अगला पद देखिए। [24]इस विचार के सम्बन्ध में कि हनन्याह *योग्य* महायाजक नहीं था इसलिए पौलुस ने उसे महायाजक के रूप में स्वीकार करने से इन्कार कर दिया, याद रखें कि उससे पहले भी बहुत से अयोग्य महायाजक हुए थे। जब परमेश्वर हमें किसी के पद का सम्मान करने के लिए कहता है, तो उस पद पर बैठे व्यक्ति के योग्य या अयोग्य होने का सवाल ही नहीं है। [25]यह घृणा इस रूप में देखी जाती है कि महायाजक कैसरिया तक भी उसका पीछा करता था (24:1; 25:2, 3 भी देखिए)। [26]देखिए लूका 20:27. [27]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' की शब्दावली में ''फरीसी'' तथा ''सदूकी'' देखिए। [28]यह तथ्य कि पौलुस को पुकारना पड़ा, संकेत देता है कि सभा में बहुत शोरगुल हो रहा था। शायद वे उस पर आक्रमण करने ही वाले थे। [29]कई लोगों ने पौलुस के शब्दों ''मैं फरीसी ... हूं'' पर आपत्ति की है। याद रखें कि (1) पौलुस फरीसियों की पदवी के लिए सराहनीय बातों पर ध्यान दिला रहा था; निश्चय ही वह फरीसियों में आई उन बुराइयों की बात नहीं कर रहा था जिनकी यीशु ने निन्दा की थी। (2) वह उस ढंग पर ज़ोर दे रहा था जैसे उसका पालन-पोषण हुआ था (26:5)। पौलुस के लिए, फरीसी के रूप में पालन-पोषण कुछ ऐसी बात थी जिसे वह पीछे छोड़ आया था (फिलिप्पियों 3:1-11), परन्तु यह उसके अतीत का एक अभिन्न अंग था। (मैं अपने आपको ''ओकी'' [ओक्लाहम वासी] कहलाता हूं, बेशक मैं पिछले अठाइस वर्षों में से वहां केवल चार वर्ष ही रहा हूं)। [30]वाक्यांश ''के वंश का'' एक इब्रानी अभिव्यक्ति थी जिसका अर्थ था ''के स्वभाव का सहभागी।'' इसलिए, ''फरीसियों के वंश का'' शब्दों का अर्थ हो सकता था कि पौलुस के पूर्वज फरीसी थे, या इसका अर्थ यह हो सकता था कि उसमें वे सभी गुण हैं जो ''फरीसी'' शब्द में होने चाहिए।

[31]वाक्यांश ''मरे हुओं की आशा और पुनरुत्थान'' मूल शास्त्र का अक्षरश: अनुवाद है। इस वाक्य का *अर्थ* है ''मुर्दों के पुनरुत्थान की [या, में] आशा'' (देखिए NIV)। [32]कई लोगों ने सुझाव दिया है कि यीशु के पुनरुत्थान के सम्बन्ध में निष्पक्ष सुनवाई के प्रयास में पौलुस केवल फरीसियों का समर्थन पाने की कोशिश कर रहा था। कुछ भी हो, पौलुस की सुरक्षा के लिए जो भी आवश्यक था परमेश्वर ने किया। [33]पौलुस के विरुद्ध फरीसियों की अपनी शिकायतें थीं, परन्तु उन्हें पुनरुत्थान के विषय में या इस सम्भावना पर कि उसे कोई स्वर्गीय दर्शन मिला होगा उसके वाक्य में ''कुछ बुराई नहीं मिल'' पाई। KJV ने आयत 9 के अन्त में जोड़ा है, ''हम परमेश्वर के विरुद्ध न लड़ें।'' ये शब्द प्रामाणिक पाण्डुलिपियों में मिलते हैं। सम्भवत: वे किसी अन्य फरीसी के पहले शब्दों की प्रतिक्रिया हैं (5:39)। [34]यह विचार जे. डब्ल्यू. मॅक्गर्वे, *न्यू कमैन्ट्री ऑन ऐक्ट्स ऑफ अपोस्टल्ज़* से लिया गया था। [35]नीतिवचन 6:12-15 भी देखिए; रोमियों 1:24, 26, 28; और इब्रानियों 6:6.